रैदास

(1388 - 1518)

पद

(1)

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

बास	–	गंध, वास
समानी	-	समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)
घन	–	बादल
मोरा	–	मोर, मयूर
चितवत	–	देखना, निरखना
चकोर	–	तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बाती	–	बत्ती; रुई, पुराने कपड़े आदि को ऐंठकर या बटकर बनाई हुई पतली पूनी, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं
जोति	–	ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जानेवाला दीपक
बरै	–	बढ़ाना, जलना
राती	–	रात्रि
सुहागा	–	सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आनेवाला क्षारद्रव्य
दासा	–	दास, सेवक

(2)

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

लाल	-	स्वामी
कउनु	-	कौन
गरीब निवाजु	-	दीन-दुखियों पर दया करनेवाला
गुसईआ	-	स्वामी, गुसाईं
माथै छत्रु धरै	-	मस्तक पर स्वामी होने का मुकुट धारण करता है
छोति	-	छुआछूत, अस्पृश्यता
जगत कउ लागै	-	संसार के लोगों को लगती है
ता पर तुहीं ढरै	-	उन पर द्रवित होता है
नीचहु ऊच करै	-	नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है
नामदेव	-	महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है
तिलोचनु (त्रिलोचन)	-	एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे
सधना	-	एक उच्च कोटि के संत जो नामदेव के समकालीन माने जाते हैं
सैनु	-	ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि 'गुरुग्रंथ साहब' में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है
हरिजीउ	-	हरि जी से
सभै सरै	-	सब कुछ संभव हो जाता है

प्रश्नोत्तर

प्रश्न–1–क– संत रैदासजी ने भगवान और भक्त की किन–किन चीजों से तुलना की है ?

उत्तर– संत रैदासजी ने भगवान को चंदन तो भक्त को पानी के समान बताया है। कवि रैदासजी ने भगवान को घन–वन, चॉंद और दीपक के समान बताया है तो भक्त को मोर, चकोर पक्षी तथा बाती के समान बताया है। भगवान को मोती और स्वामी बताया है तो भक्त को धागे और दास की तरह बताया है। इस प्रकार संत रैदासजी ने भगवान और भक्त की तुलना की है।

प्रश्न– घ– कवि ने ‘गरीब निवाजु‘ किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– जो दीन–दुखियों और कमज़ोर लोगों पर दया करते हैं, उन्हें ‘गरीब निवाजु‘ कहा जाता है। ईश्वर ही दीन–दुखियों पर दया करते हैं। वे ही उन पर कृपा करते है और उन पर द्रवित भी होते हैं। इसलिए रैदासजी ने ईश्वर को ‘गरीब निवाजु‘ कहा है।

प्रश्न–ड– 'जाकी छोति जगत कउ– – – –ढरै' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– समाज में कुछ लोग दीन–दुखियों, गरीबों और नीची जाति के लोगों को अछूत समझते हैं। उनसे दूर रहते हैं। उन्हें अपना नहीं समझते। रैदासजी कहते हैं कि ईश्वर उन अछूतों को अपना समझते हैं। उन पर कृपा करते हैं। उन पर द्रवित होते है। ईश्वर की इसी विशेषता की ओर संकेत करना ही 'जाकी छोति– – –ढरै' पंक्ति का आशय है।

6. ‘रैदास’ ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

उत्तर:- रैदास ने अपने स्वामी को गुसईया, गरीब, निवाजु, लाल, गोबिंद, हरि, प्रभु आदि नामों से पुकारा है।

नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

1. जाकी अँग-अँग बास समानी

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि जैसे चंदन के संपर्क में रहने से पानी में उसकी सुगंध फैल जाती है, उसी प्रकार एक भक्त के तन मन में ईश्वर भक्ति की सुगंध व्याप्त हो गई है।

2. जैसे चितवत चंद चकोरा

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि जैसे चकोर पक्षी सदा अपने चन्द्रमा की ओर ताकता रहता है उसी भाँति मैं (भक्त) भी सदा तुम्हारा (ईश्वर को) प्रेम पाने के लिए तरसता रहता हूँ।

3. जाकी जोति बरै दिन राती

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि स्वयं को दिए की बाती और ईश्वर को दीपक मानते है। ऐसा दीपक जो दिन-रात जलता रहता है।

4. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर से बढ़कर इस संसार में निम्न लोगों को सम्मान देनेवाला कोई नहीं है। समाज के निम्न वर्ग को उचित सम्मान नहीं दिया जाता है परन्तु ईश्वर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं। अछूतों को समभाव से देखते हुए उच्च पद पर आसीन करते हैं ।

5. नीचहु ऊँच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर हर कार्य को करने में समर्थ हैं। वे नीच को भी ऊँचा बना लेता है। उनकी कृपा से निम्न जाति में जन्म लेने के उपरांत भी उच्च जाति जैसा सम्मान मिल जाता है।

9. रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– पहले पद में रैदासजी अपनी तुलना भगवान से करते हैं। उनका मानना है कि भगवान हमारे अंदर रहता है। वह सर्वगुण संपन्न है। हमें उनके समान बनना चाहिए। दूसरे पद में रैदासजी कहते हैं कि ईश्वर उदार हैं। वे सब पर कृपा करते हैं। वे सबको समान दृष्टि से देखते हैं। वे दीन–दुखियों, गरीबों और नीची जाति के लोगों को भी अपनाते हैं और उन पर द्रवित होते हैं। ईश्वर ही सब कुछ संभव कर सकते हैं। इसलिए हमे उनकी भक्ति करनी चाहिए। यही संत रैदासजी के पदों का केंद्रिय भाव है।

धन्यवाद